Importance of cultural elements (population, language and religion) in the control and determination of political landscape.

राजनीतिक परिदृश्य के नियंत्रण एवं निर्धारण में सांस्कृतिक तत्वों (जनसंख्या, भाषा एवं धर्म) का महत्व– एक अध्ययन

डा. मनोज सिंह

सारांश :– प्रस्तुत लेख में सांस्कृतिक तत्वों जनसंख्या , भाषा एवं धर्म का राजनीतिक परिदृश्य पर पड़ने वाले प्रभाव का विवेचन है । जनसंख्या में विरल एवं सघन जनसंख्या के महत्व को स्पष्ट किया गया है। वहीं सांस्कृतिक तत्व भाषा की समस्या जैसे क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय भाषा के चयन तथा विश्व भाषा की संभावना तलाशने का विवेचन है। तीसरे सांस्कृतिक तत्व के रूप में धर्म, जैसे प्रोटेस्टेंट, कैथोलिक, आर्थोडाक्स, इस्लाम, हिन्दू तथा बौद्ध के मध्य उत्पन्न संघर्ष , वहीं समान धर्मी संघर्ष का लेख में स्पष्ट विवेचन किया गया है। उपरोक्त तीनों तत्वों का राजनीतिक परिदृश्य के नियंत्रण एवं निर्धारण में इनकी भूमिका और महत्व का विवेचन किया गया है।

प्रस्तावना :– प्रस्तुत लेख में राजनीतिक परिदृश्य के नियंत्रण एवं निर्धारण में सांस्कृतिक तत्वों जनसंख्या , भाषा और धर्म का विवेचन किया गया है। तीनों तत्वों द्वारा उत्पन्न विवाद , विवधता एवं संधर्ष का प्रभाव परिलक्षित किया गया है। लेख की मौलिकता और प्रमाणिकता एवं लेखन शैली का विशेष ध्यान रखा गया है। ताकि जनसंख्या , भाषा और धर्म का प्रभाव राजनीतिक परिदृश्य में स्पष्ट हो सके।

प्रासंगिकता :– प्रस्तुत लेख में वर्तमान परिस्थितियों एवं पूर्व परिस्थितियों में सांस्कृतिक तत्वों –जनसंख्या , भाषा एवं धर्म के महत्व को राजनीतिक परिदृश्य के निर्धारण में प्रस्तुत कर सांस्कृतिक तत्वों की प्रासंगिकता को स्पष्ट किया है। प्रत्येक तत्व के महत्व , संघर्ष एवं अवरोधों की प्रासंगिकता का विवेचन है। साथ ही राष्ट्रों, राज्यों को लेख द्वारा इन सांस्कृतिक तत्वों के महत्व को समझाने का प्रयास किया गया है कि इन राष्ट्रों, राज्यों द्वारा इन सांस्कृतिक तत्वों पर ध्यान देने से राष्ट्र, राज्य समृद्ध, सम्पन्न एवं सुरक्षित हो सकता है।

प्रमुख शब्द :– *सांस्कृतिक तत्व , राजनीतिक परिदृश्य, जनसंख्या , भाषा, धर्म, सधन, बिरल, जनाधिक्य, स्पेनिश, पुर्तगीज, जर्मन, इटालियन, कास्टीलियन, साल्विक, पोलिश, यूक्रेनियन, बेलोरसियन, ग्रीको–रोमन, फ्लेनिश, वालोन (फ्रेन्च), लिन्गुआ–फ्रांका, विश्व भाषा, ईसाई, शिया, सुन्नी, लूथरन, रिफर्म्ड, आदि।*

राजनीतिक परिदृश्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक मानव समूह या जनसंख्या है किन्तु प्राकृतिक तत्वों को प्रभावति करने में सांस्कृतिक तत्व भाषा धर्म कम महत्वपूर्ण नहीं हैं अर्थात् हम यह कह सकते हैं। जनसंख्या , भाषा, धर्म प्रदेश के राजनीतिक परिदृश्य को नियंत्रित एवं निर्धारित करते हैं।

"A specific culture is the total way of life of people"

Broek and Webb.

राजनीतिक परिदृश्य के नियंत्रण एवं निर्धारण में जनसंख्या का महत्व :– राज्य का अस्तित्व जनसंख्या पर निर्भर करता है, दूसरी ओर राज्य का उद्देश्य जनसंख्या का हित एवं सुरक्षा होता है। राज्य के राजनीतिक स्वरूप का निर्धारण भी इसी से सम्भव होता है। यह राष्ट्रीय शक्ति का प्रमुख भौगोलिक उपकरण है राज्य का विकास अर्थात कृषि, उद्योग, खनिज, परिवहन आदि जनसंख्या द्वारा प्रभावित होते हैं। इसी प्रकार राज्य की विदेश नीति पर उसकी जनसंख्या का प्रभाव पड़ता है। जनसंख्या के विवध रूप जैसे वितरण, घनत्व, विकास , आयु, जनाधिक्य, स्थानांतरण आदि न केवल राज्य की आंतरिक व्यवस्था को प्रभावित करते हैं अपितु विश्व राजनीति पर इसका अधिक प्रभाव पड़ता है। अतः जनसंख्या को प्रमुख मानवीय तत्व माना जाता है।

"the legal foundation of the state its territory, but its reality exist only in its citizen. In their numbers their distribution, their biological and demographic, characteristics', their economic development and their social institutions and cultural heritage." [1]

निस्संदेह यह सत्य है कि मानव संस्था वर्तमान विश्व में राजनीतिक शक्ति को प्रभावित करती है उदाहरणार्थ चीन जो आज से पचास वर्ष पूर्व तक निर्बल राष्ट्र था, अब साम्यवादी व्यवस्थित सरकार की स्थापना के बाद एक महाशक्ति बन गया , इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान जनसंख्या का ही रहा।

यद्यपि विश्व में राजनीतिक शक्ति के लिए केवल जनसंख्या की मात्रा पर्याप्त नहीं है अपितु उसके गुण अर्थात् कार्य क्षमता , जीवन स्तर, तकनीकी ज्ञान भी महत्व रखते हैं। यद्यपि यह भी सत्य है कि यदि कुल जनसंख्या बहुत कम है तो देश विश्व में शक्तिशाली नहीं हो सकता है किन्तु वास्तविकता यह है कि राज्य के कुल संसाधनों एवं जनसंख्या में सामंजस्य होना चाहिए किन्तु इस सामंजस्य की क्या सीमा हो यह एक विवादास्पद एवं अनिश्चित प्रश्न है ? ग्रेट ब्रिटेन ने इतने अधिक समय तक विश्व के अनेकों भागों पर अपना

आधिपत्य बनाये रखा जबकि उसकी स्वयं की जनसंख्या कम थी। वर्तमान समय में पूर्व सोवियत संघ , संयुक्त राज्य, फ्रांस, चीन, भारत की जनसंख्या एवं राजनीतिक शक्ति तथा क्षमता में भिन्नताएं हैं। यद्यपि यह कटु सत्य है कि अधिक जनसंख्या राष्ट्रीय शक्ति प्रदायक एवं अवरोधक दोनों ही रूप में होती है। [2]

अधिक जनसंख्या घनत्व में आर्थिक क्षमता कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्रों में भिन्न होती है। पूर्वी यूरोप कृषि पर सदैव जनाधिक्य क्षेत्र रहा यही कारण है कि यहां गरीबी में स्थानान्तरण की प्रवृत्ति रही है। इटली में अधिक जनसंख्या से स्थायी नियोजन की समस्या रही है। एशिया में यह समस्या और अधिक भयंकर है। यहॉ चीन और भारत की जनसंख्या इन दोनों के लिए नहीं अपितु एशिया महाद्वीप के खतरा है। जापान में वृद्धि की दर अधिक होने के कारण जनसंख्या स्तर बनाये रखने की समस्या हो रही है इसीलिए जनाधिक्य के लिए कहा जाता है। '' जनसंख्या दबाव के फलस्वरूप अस्थिर दशाएं उत्पन्न होती हैं जिसके कारण अर्न्तराष्ट्रीय जटिलता का जन्म होता है।'' [3]

आज विश्व के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है क्योंकि यदि जनसंख्या में इसी गति से वृद्धि होती गयी और उसको पर्याप्त भोजन उपलब्ध नहीं हुआ तो वह केवल देश की शांति को ही नहीं अपितु विश्व के लिए खतरा है। आज विश्व का प्रत्येक देश जनसंख्या की समस्या के प्रति सजग है। राज्य अनेक प्रकार के नियम बनाकर परिवार नियोजन से बाहर आने व्यक्तियों पर रोक लगाकर नये साधनों की खोजकर साधनों के नियोजित उपयोग आदि द्वारा इस समस्या के निराकरण का प्रयत्न करता है।

जनसंख्या के सन्दर्भ में परिवर्तित शक्ति संतुलन *(changing balance of power as expressed in the population)* –

राज्य के लिए जनसंख्या एक शक्ति का श्रोत है। मानव शक्ति के अनेक स्वरूप होते हैं प्रथम – शारीरिक शक्ति जिसका उपयोग आर्थिक उत्पादनों में तथा सैनिक शक्ति के रूप में होता है। द्वितीय – ज्ञान स्तर के रूप में अर्थात शैक्षणिक, वैज्ञानिक आदि जिससे प्राचीन तथा वर्तमान दशाओं का अध्ययन कर नवीन साधनों के उपयोग का ज्ञान होता है। राज्य का आन्तरिक प्रशासन तथा अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्ध इन्हीं लोगों के द्वारा नियंत्रित हैं। तृतीय – मानव शक्ति का दार्शनिक स्वरूप , इसके द्वारा राष्ट्रीय भावना का विकास होता है।

उपर्युक्त तीनों स्वरूप विश्व के प्रत्येक देश में भिन्न –भिन्न होते हैं। ये दशाएं राज्य की राजनीतिक शक्ति को प्रभावित करती हैं राज्य की उत्पादन क्षमता पूर्ण रूप से मानव शक्ति पर निर्भर करती हैं। विकासशील तथा ज्ञान युक्त जनसंख्या के अभाव में राज्य के साधनों का उपयोग नहीं होता या अन्य देशों द्वारा होता है। यदि जनसंख्या और आर्थिक साधनों में संतुलित सामंजस्य है तो वह राष्ट्र अवश्य ही विश्व में अपना स्थान बना लेगा।

भाषा – सांस्कृतिक तत्व *(Language – A cultural Factor)* –

राजनीतिक भूगोल के सांस्कृतिक तत्वों में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा न केवल क्षेत्रीय अपितु अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्धों में सहायता मिलती है। इसी के द्वारा अभिव्यक्ति सम्भव होती है। अतः यह राष्ट्रों में एकता अथवा विवधता का प्रमुख कारण होती है। [4]

सम्पूर्ण अमेरिका में सामान्यतया तीन भाषाएं अर्थात् उत्तरी भाग में अंग्रेजी, दक्षिण में स्पेनिश एवं पुर्तगीज हैं। ये तीनों भाषाएं यहां आने वाले विदेशियों की थीं। यूरोप में विविध भाषा प्रारूप दृष्टिगोचर होते हैं। केवल जर्मनी, आस्ट्रेलिया एवं कुछ छोटे देशों को छोड़कर किन्हीं दो देशों में समान भाषा नहीं है। सम्पूर्ण यूरोप की भाषाओं को तीन भाषा समूहों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम – जर्मनिक *(Germanic)* में अंग्रेज, जर्मन, नार्वेनियन एवं स्वीडिश । द्वितीय – रोमानिक *(Romanic)* में फ्रेंच, इटालियन, कास्टीलियन, पुर्तगीज एवं तृतीय – साल्विक *(Salvic)* में पोलिश, यूक्रेनियन, बेलोरसियन और रशियन सम्मलित की जाती हैं। जर्मनिक भाषाएं उत्तरी पश्चिमी एवं मध्य यूरोप में रोमानिक दक्षिण –पश्चिमी एवं दक्षिणी मध्य यूरोप में तथा साल्विक पूर्वी यूरोप में प्रचलित है।

एशिया महाद्वीप में भारत एवं पाकिस्तान में 222 भिन्न –भिन्न प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं। भारत में यद्यपि 'हिन्दी' को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया गया है किन्तु इससे सम्बन्धित विवाद आज भी उठते हैं। इण्डोनेशिया मलाया में 'लिन्गुआ –फ्रान्का *(Lingua - Franca)* को सामान्य भाषा बनाया गया है। फिलीपाइन्स में भी लगभग 64 स्थानीय भाषा तथा बोलियां प्रचलित हैं किन्तु सरकारी भाषा के रूप में इंग्लिश प्रयुक्त की जाती है।

दक्षिणी अफ्रीका में 'बोर' जो अफ्रीकन भाषा बोलते हैं वह इंग्लिश का मिश्रण है। आस्ट्रेलिया की अधिकांश जनसंख्या ब्रिटिश है वहां राजकीय भाषा इंग्लिश है। अल्पसंख्यक भाषाएं राज्य की एकता को प्रभावित करती है। सरकार उनके प्रति कठोर व्यवहार नहीं रखती यही कारण है कि ग्रीको–रोमन स्विटजर लैण्ड की सरकारी भाषा में सम्मलित की गयी है। स्काटलैण्ड में गैलिक *(Galic)* वेल्स में *(Welish)* फ्रांस में ब्रेटोन्स *(Bretons)* के प्रति सरकार का रूख सहानुभूति पूर्ण रहा है।

विश्व भाषा *(World Language)* **:-** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विश्व में अत्यधिक भाषा विविधता है। यद्यपि सैद्धान्तिक रूप से विश्वभाषा के पक्ष में सभी हैं। किन्तु इसकी व्यावहारिकता में अत्यधिक कठिनाइयॉ हैं। क्योंकि प्रत्येक देश विशेषकर वर्तमान युग की विश्व शक्तियां किसी दूसरे देश की भाषा को विश्व–भाषा रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं है। संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी विश्व व्यापी संस्था भी इसमें एकरूपता लाने में असमर्थ रही है। आजकल अधिकांश अन्तराष्ट्रीय सम्मेलनों में दुभाषियों की सहायता ली जाती है। विश्व भाषा का प्रश्न एक विचारणीय प्रश्न है। विश्व में अधिकतम देशों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार में ली गयी इंग्लिश भाषा है। इंग्लिश का सर्वाधिक

अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप विकसित हुआ है किन्तु इसको विश्व भाषा स्वीकार करने में इतनी अधिक मत भिन्नता है कि यह प्रश्न विवाद में खो जाता है।

भाषा का राजनीतिक प्रभाव *(Political Impact Of Language)* :-

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विश्व में अनेक भाषाओं का प्रचलन है विश्व में अनेक भाषाओं का होना स्वाभाविक है किन्तु एक राज्य में भाषागत विविधता से राजनीतिक एवं सांस्कृतिक गतिरोध विकसित हो जाता है। राजनीतिक भूगोल में भाषा का पक्ष महत्वपूर्ण है जो राज्यों की राजनीति को प्रभावित करता है।

राजनीतिक परिदृश्य के नियंत्रण एवं निर्धारण में सांस्कृतिक तत्व –धर्म की भूमिका – धर्म का महत्व समाज में प्राचीन काल से रहा है यही नहीं अपितु पूर्वकाल में अनेक युद्धों का कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धर्म रहा है विश्व के सभी धर्मों में केवल बौद्ध धर्म को छोड़कर असहिष्णुता तथा दूसरे धर्मों को प्रति विद्वेष रहा है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण भारत –पाक एवं अरब –इसराइल संघर्ष है जिसके लिए अन्य राजनीतिक कारणों के अतिरिक्त धर्म भी उत्तरदायी है।

राजनीतिक भूगोल में धर्म के महत्व के दो कारण हैं प्रथम– धार्मिक असहिष्णुता एवं जटिलता का प्रभाव राजनीतिक शक्ति पर पड़ता है एवं द्वितीय धार्मिक संगठन राजनीतिक गतिविधियों को प्रभावित करती है किन्तु आज परिस्थितियां बदलीं हैं और समधर्मी मुस्लिम–मुस्लिम , कैथोलिक –कैथोलिक या प्रोटेस्टेंट –प्रोटेस्टेंट तथा हिन्दू–हिन्दू के आन्तरिक युद्ध भी सामने आते रहते हैं।

धर्म की एकरूपता राज्य को शक्ति प्रदान करती है । दूसरी ओर धार्मिक जटिलता या भिन्नता राज्य को निर्बल बनाती है। धार्मिक एकरूपता के उदाहरण स्परूप हम फ्रांस , स्पेन, बेल्जियम, आस्ट्रिया, लैटिन अमेरिकी देश जो कैथोलिक हैं को लिया जा सकता है। इसी प्रकार अरब देशों में शिया, सुन्नी के मतभेद के अतिरिक्त समानता है। दूसरी ओर संयुक्त राज्य तथा कनाडा में रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों हैं तथा उनमें संघर्ष भी होता रहता है। जो यहां की राजनीति को प्रभावित करते हैं।

विश्व का इतिहास इसका साक्षी है कि धर्म ने राजनीति को अत्यधिक प्रभावित किया है। धर्म युद्ध या धर्म प्रसार हेतु विस्तार की नीति के कई उदाहरण इतिहास में मिलते हैं। धर्म का वर्तमान विश्व की राजनीति तथा राज्यों की राजनीति पर पर्याप्त प्रभाव है। विश्व के प्रमुख देशों में धार्मिक प्रधानता का स्वरूप निम्नवत् है–

1–रोमन कैथोलिक :–

1.1–(90 प्रतिशत से अधिक)– *रोमन कैथोलिक धर्म के अनुयायी अर्जेन्टाइना, आस्ट्रलिया, बेल्जियम, बोलविया, ब्राजील, चिली, कोलम्बिया, कोस्टोरिका, क्यूबा, एल सेल्वाडोर, इक्वेडोर, फ्रांस, ग्वाटेमाला, हाटी, होन्डारस, आयरलैण्ड, इटली, मैक्सिको, पनामा, पैराग्वे, पीरू में निवास करते हैं।*

1.2–रोमन कैथोलिक जो साम्यवादी द्वारा मान्य हैं – *पुर्तगाल, स्पेन, युरूग्वे, वेनेजुऐला, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी और पोलैण्ड में निवास करते हैं।*

2– एग्लिकन चर्च :–*आस्ट्रेलिया, इग्लैण्ड, उत्तरी आयरलैण्ड में अधिकतम अनुयायी रहते* ***हैं।***

3–आर्थोडोक्स चर्च (मास्को द्वारा समर्थित) :– *बुल्गारिया, रूमानिया, सोवियत संघ में अधिकतर अनुयायी रहते हैं।*

4–अन्य ईसाई चर्च :–

4.1– ***प्रथकता वादी चर्च –*** *कनाडा (यूनाइटेड चर्च) इथोपिया (कोप्टिक) लेबनान (मारोनीटी) स्काटलैण्ड, प्रेस्वीटेरियन में अधिकतर अनुयारी रहते है।*

4.1.1–लूथरन चर्च – *डेनमार्क , फिनलैण्ड, जर्मनी, आइसलैण्ड, नार्वे, स्वीडन, में बहुसंख्यक लोग निवास करते हैं।*

4.1.2– रिफर्म्ड चर्च – *नीदरलैण्ड, स्विटजरलैण्ड, अफ्रीका में बहुसंख्यक हैं।*

4.1.3– आर्थोडोक्स चर्च – *ग्रीस, यूगोस्लाविया में निवास करते है।*

4.2. बिना बहुमत वाले चर्च – *न्यूजीलैण्ड एवं संयुक्त राज्य में हैं।*

5– इस्लाम :–

5.1– सुन्नी इस्लाम देश – *अफगानिस्तान, अल्बानिया, मिश्र, इण्डोनेशिया, इराक, जार्डन, पाकिस्तान, सूडान, सीरिया, ट्यूनेशिया टर्की आदि में अधिक संख्या में निवास करते हैं।*

5.2– सुन्नी के अतिरिक्त शिया बहुमत वाले देश – *ईरान, लीबिया, मोरक्को, अमन, सऊदी अरब, वर्मा, कम्पूचिया आदि में इनकी बहुलता है।*

6– बौद्ध :– *श्री लंका, लाओस, थाईलैण्ड, जापान एवं सीमित रूप से चीन में निवास करते हैं।*

7– अन्य :– *भारत (हिन्दू धर्म), इसराइल (यहूदी) धर्म के लोग निवास करते हैं।*

धर्म का राजनीति पर प्रभाव का निम्न तथ्यों के आधार पर अध्ययन किया जा सकता है – (1) धर्म एवं राजनीतिक एकता (2) धर्म आन्तरिक एवं बाहरी संघर्ष का कारण (3) धर्म का राजनीतिक सीमाओं पर प्रभाव (4) धार्मिक शासन नियम (5) धर्म पर आधारित राजनीतिक दल (6) राष्ट्रवाद का पोषक धर्म एवं (7) अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति में धर्म

धर्म के सम्बन्ध में यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि धर्म का राजनीति पर प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि धर्म का भावनात्मक सम्बन्ध होने के कारण अनेक बार यह प्रभावशाली हो जाता है। उक्त कथन से स्पष्ट है–

" It there by influence strongly the political map] even whwre religion as such loss its hold its conditioning influence survives] or its place is taken by pseudoreligions." [5]

यह सत्य है कि वर्तमान युग में जन जागृति का इतना विस्तार हो गया है कि कोई राज्य धर्म के आधार पर ही राजनीतिक एकता की कल्पना नहीं कर सकता। धर्म एकता स्थापित करने वाले अनेक कारणों में एक हो सकता है। पाकिस्तान एक धर्मावलम्बी होते हुए भी दो भागों (पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान) में संघर्षोपरांत विभाजित हुआ और बांग्लादेश का उदय हुआ। अतः स्पष्ट है कि मात्र धार्मिक एकता के आधार पर राष्ट्रीय एकता उस समय तक सम्भव नहीं हो सकती जब तक कि अन्य सभी तथ्यों में एकता न हो।

निष्कर्ष :– प्रस्तुत लेख से स्पष्ट होता है कि प्राकृतिक तत्वों के समान ही सांस्कृतिक तत्व भी एक प्रदेश के राजनीतिक परिदृश्य को न केवल नियंत्रित अपितु निर्धारित करते हैं। सांस्कृतिक तत्वों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानव समूह या जनसंख्या है, इसके अतिरिक्त भाषा, धर्म आदि का महत्व कम नहीं है। प्रत्येक तत्व अपने आप में प्रभावशाली होता है। लेख में जनाधिक्य एवं कम जनसंख्या के प्रभाव का विवेचन करते हुए मानवशक्ति को स्पष्ट किया है। जिसमें चीन जैसे राष्ट्र को समायोजित किया है वहीं दूसरी ओर ब्रिटेन का तकनीकी विकास कम जनसंख्या होने के बावजूद अत्यन्त प्रभावशाली रहा । सघन एवं विरल जनसंख्या का स्पष्टीकरण राजनीतिक परिदृश्य के नियंत्रण एवं निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

प्रस्तुत लेख में भाषा को सांस्कृतिक तत्व स्वीकार करते हुए भाषायी विविधता तथा भाषायी समस्या पर प्रकाश डाला है। क्षेत्रीय भाषाओं के साथ विश्व भाषा के विषय में भी लेख में स्पष्ट किया गया है और विश्व भाषा अपनाने में उत्पन्न समस्या अलग–अलग राष्ट्रीय एवं भाषायी पहचान है। जिस पर सर्वसम्मति न होकर आज तक विवादित प्रश्न है। भाषायी आधार भी राजनीतिक परिदृश्य के नियंत्रण एवं निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

प्रस्तुत लेख में सांस्कृतिक तत्व के रूप में धर्म की भूमिका का उल्लेख किया गया है। धार्मिक सहिष्णुता , असहिष्णुता का यथास्थान उल्लेख किया गया है। धार्मिक विविधता में युद्ध का होना, वहीं समान धर्म में भी संघर्ष का स्पष्टीकरण किया है। लेख में धर्म और उससे सम्बन्धित अनुयायी तथा सम्बन्धित देशों का विवेचन है।

अतः संक्षेप रूप में कहा जा सकता है कि राजनीतिक परिदृश्य के नियंत्रण एवं निर्धारण में सांस्कृतिक तत्व जनसंख्या , भाषा एवं धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

Reference :-

1-Weigert, H.W. and others : Principles of Political Geography, 1957,p-293

2-"large population can be source of National weakness as well as strength."

- *F.W.Notestien " fundamental of population change in Europe and Soviet Union from compass of the world, New York, 1947, page -429.*

3-" Population Pressure where it exists, cause is tension an unstable condition and may lead to International complication."

- *Van valkenburg and stoz : Elements of Political Geography 1960, page -313*

4-"There are features which generate binding and sepereting force in the lives of Nations."

- *Weigert and others : Principles of Politica Geography 1957, page -383.*

5-Weigert, H.W.& others : principles of political geography, p -439.